अध्याय पन्द्रह

शिक्षा तथा संस्कृति

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इस जिले में स्थित नैमिषारण्य का उल्लेख वाल्मीकीय 'रामायण' में मिलता है, परन्तु उन दिनों प्रचलित शिक्षा प्रणाली के संबंध में उत्तरकाण्ड के सर्ग 92 के श्लोक 5 में इस स्थान संबंधी एक प्रसंग से कुछ भी जानकारी नहीं हो पाती। इस विषय में अपेक्षाकृत अधिक जानकारी 'महाभारत' से मिलती है, जिसमें प्रारम्भ में ही नैमिषारण्य का उल्लेख किया गया है जहां शौनक ने बारह वर्ष तक यज्ञ किया था।[1] शौनक उस स्थान के, जो एक वन स्थित विश्वविद्यालय था, पीठासीन आचार्य या कुलपति थे।[2] शौनक के इस यज्ञ में विद्वानों का विशाल समुदाय एकत्र हुआ और वहां धार्मिक, दार्शनिक तथा विज्ञान संबंधी विषयों पर वाद-विवाद तथा शास्त्रार्थ किए गए।[3] एक अन्य विशिष्ट व्यक्तित्व उग्रश्रवा सौति द्वारा यहां सम्पूर्ण महाभारत का आद्योपान्त पाठ किया गया।[4] पुराणों में भी नैमिषारण्य का उल्लेख 26,000 ऋषियों तथा उनके असंख्य शिष्यों के निवास स्थान के रूप में किया गया है, जो अपना समय अष्टांग योग का अभ्यास करने, परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करने, धार्मिक कथाओं का पाठ करने, मोक्ष प्राप्ति के साधनों पर विचार-विमर्श करने, जिज्ञासी तथा ज्ञान की प्रवृत्ति का विकास करने तथा यह ज्ञात करने में कि मर्यादित ढंग से जीवन कैसे व्यतीत किया जाना चाहिये, लगाते थे।[5]

उन दिनों शिक्षा किस प्रकार प्रदान की जाती थी, इसके संबंध में केवल उस परम्परा को छोड़कर जिसमें ऋषि सामान्यतया आश्रम अथवा कुटी में शिक्षा प्रदान करते थे तथा विद्वान ब्राह्मण, जो गृहस्थों की भांति रहते थे, अपने घर पर शिक्षा प्रदान करते थे, और अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है, उस समय आज की भांति राजकीय विद्यालय नहीं होते थे।

मध्य युग में शिक्षा का संचालन प्रायः धार्मिक गुरुओं तथा संस्थाओं द्वारा किया जाता था। मुसलमानों के अपने मकतब तथा खानकाह (मठ) थे, जहां मौलवियों द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी; हिन्दू अपनी शिक्षा पाठशालाओं में प्राप्त करते थे, जिनका संचालन अधिकतर ब्राह्मणों द्वारा किया जाता था। ऐसे अध्यापकों का भरण-पोषण साधारणतया स्वैच्छिक दानादि से होता था जो सामान्यतः वस्तुओं के रूप में होते थे। बाद में, मुगलकाल में लहरपुर तथा खैराबाद को इस्लामी ज्ञान के केन्द्रों के रूप में ख्याति प्राप्त हुई। यह बताया जाता है कि हुमायूं के शासन काल में एक प्रसिद्ध धर्मोपदेशक, शाह अब्दुल रहमान जांबाज कलन्दर ने लहरपुर में एक विद्यालय की स्थापना की, जिसने बड़ी ख्याति अर्जित की और जहां दूर-दूर से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। पाठ्यक्रम में बहुत से विषय जैसे विधि, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, अलंकारशास्त्र, साहित्य (फारसी तथा अरबी), गणित, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र सम्मिलित थे तथा अब्दुल रहमान सभी विषयों को स्वयं पढ़ाते थे। मदरसे की प्रगति अस्थिर रही; देश में राजनैतिक परिवर्तनों के कारण यह अनेक बार बन्द हुआ। आज यहां जो विद्यालय हैं उनकी स्थापना मौलवी सैयद शाह मुहम्मद रुकनुद्दीन कलन्दर द्वारा मूल संस्थापक की दरगाह पर 1880 में की गई थी और यह मदरसा इस्लामिया रुकनिआ अरबिया के नाम से जाना जाता है। 1906 में उनके पुत्र मौलवी सैयद शाह मुहम्मद इस्माइल कलन्दर ने एक वक्फ (धर्मस्व निधि) कायम किया। वर्तमान मदरसा इसी के अधीन चलता है। हाफिज सैयद मुहम्मद अली खैराबादी ने, जिनका जन्म 1778ई0 में हुआ था और जो शेख साद खैराबादी (लखनऊ के शाह मीना के शिष्य) के वंशज थे, खैराबाद में एक खानकाह (मठ) की स्थापना की, जिसका विकास ज्ञान तथा आध्यात्मिक मार्ग-दर्शन के एक केन्द्र के रूप में हुआ तथा इसने चिश्ती सिद्धान्तों तथा विचारधाराओं को अवध और दक्षिणी भारत में फैलाया। वे मौलाना रुम, इब्ने-अरबी तथा मौलाना जामी की कृतियों को स्वयं पढ़ाया करते थे तथा उनकी कक्षाओं

---

[1] महाभारत–(गीता प्रेस), आदि पर्व अध्याय 1, श्लोक 1।

[2] आर0 के0 मुखर्जी : ऐन्शेन्ट इन्डियन एजुकेशन, पृ0 333–334।

[3] तत्रैव पृ0 333–334।

[4] महाभारत, आदि पर्व, अध्याय 1 श्लोक 9–25।

[5] स्कन्द पुराण, [श्री वेंकटेश्वर (स्टीम) प्रेस, सम्वत् 1966]; ब्रह्म खण्ड, अध्याय 1, श्लोक 1–9।